International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 7, July 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मुगल राजनीति में नूरजहाँ की राजनीतिक भूमिका

डॉ0 राकेश रंजन सिन्हा,
एसोशिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
इतिहास विभाग, कुवंर सिंह महाविद्यालय,
लहेरियासराय, दरभंगा।

मुगल सत्ता की स्थापना के बाद हमें राजनीतिक जीवन में स्त्रियों की भागीदारी से संबंधित अनेक जानकारी मिलती है। सल्तनत काल के भांति मुगल हरम की अनेक महिलाओं ने समकालीन राजनीति और प्रषासन को बहुत हद तक प्रभावित किया।

मुगल काल में महिलाओं के राजनीति में सक्रिय भागीदारी का सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण **नूरजहाँ** है, जिसकी शादी 1611 ई0 में जहाँगीर के साथ हुई थी। न केवल मुगलों में, बल्कि भारतीय परंपरा के अनुसार भी प्रथम महिला होने का गौरव समान्यतः बादषाह की माँ को प्राप्त होता था परंतु नूरजहाँ की बहादुरी, बुद्धिमता, दयालुता और राजनीतिक सूझ–बूझ के कारण जहाँगीर ने न केवल उसे **'बादशाह बेगम'** की उपाधि दी थी बल्कि साम्राज्य की प्रथम महिला होने का गौरव भी प्रदान किया था। राजनीतिक समस्याओं को समझने की उसमें अदभूत क्षमता थी। वह न केवल जहाँगीर को महत्वपूर्ण मामलों मे सलाह देती थी बल्कि स्वंय भी प्रषासनिक मामलों में सक्रिय भागीदारी लेती थी। यही कारण है कि नूरजहाँ की राजनीतिक भूमिका इतिहासकारों के बीच विवाद का विषय रही है। यह विवाद प्रमुख रूप से निम्नलिखित बिन्दुओं पर केन्द्रित है–

1. अपने पारिवारिक गुट द्वारा शासन करन की उसकी महत्वाकांक्षा।
2. जहाँगीर को अपने प्यार के प्रभाव में लाकर शाही शक्ति को अपने अधीन करना।
3. शाहजहाँ और महावत खाँ से उसकी शत्रुता के कारण सामाज्य में विद्रोह और अव्यवस्था का माहौल बनना।

समकालीन फारसी इतिहासकार भी इस विवाद पर दो भागों में विभक्त दिखते है। जहाँगीर के काल में लिखे गए वली सरहिन्दी की 'तवारीख–ए–जहाँगीरषाही' कामी षिराजी की 'फतहनामा–ए–नूरजहाँ बेगम में नूरजहाँ के पारिवारिक दल या उसके राजनीति पर नकारात्मक प्रभाव का कोई वृतांत नहीं मिलता यहाँ तक की 'तुज्क–ए–जहाँगीरी में भी इसकी कोई चर्चा नहीं है। यह आष्चर्य की बात है कि 'तवारीख–ए–जहाँगीरषाही' जहाँगीर के शासन के 14वें वर्ष में शाही अनुकम्पा प्राप्त करने के लिए लिखी गई परन्तु नूरजहाँ का उल्लेख तक नहीं है। दूसरी ओर दो ऐसी रचनाएँ है जिसमे समकालीन राजनीति में नूरजहाँ के प्रभाव की चर्चा है। उनमें एक है–मौतमिद खाँ रचित 'इकबाल नामा–ए–जहाँगीरी' जिसमें नूरजहाँ ओर खुर्रम के बीच हो रहे राजनीति की चर्चा है तथा दूसरी रचना है 'मासीर–ए–जहाँगीरी' जिसकी रचना 1630 ई0 में कामगार हुसैन द्वारा की गई थी।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 7, July 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मौतमिद खान जोरदार शब्दों में नूरजहाँ के अत्याधिक प्रभाव तथा उसके सगे, संबंधियों तथा मित्रों को राज्य में पद तथा नियुक्तियाँ प्राप्त होने की षिकायत करता है तथा कहता है कि हिन्दुस्तान की सबसे अच्छी जागीरें उन लोगों के हाथों में थी जो या तो उसके रिष्तेदार थे या सहयोगी। मौतमिद् खान यह भी सिद्ध करने के लिए व्यग्र है कि नूरजहाँ स्वार्थो के कारण शाहजहाँ के प्रति द्वेषपूर्ण तथा अन्यायपूर्ण थी। ये दोनों ही ग्रंथ शाहजहाँ के शासन में लिखे गए थे अतः नूरजहाँ के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित थे। जहाँगीर ओर शाहजहाँ के काल में आए कुछ युरोपिय यात्रो भी जैसे–सर थॉमस रोत्र मित्रें डेलावेला, जॉन डीलेट और पीटर मुन्डी नूरजहाँ द्वारा निर्मित गुट तथा उसके जहाँगीर के प्रषासन पर प्रभाव की चर्चा करते है। विदेषी यात्री सामान्य जनता और उमरा वर्ग के बीच हुए बातचीत के आधार पर इसकी सच्चाई को स्वीकार करते है। विषेषकर पीटर मुन्डी ने तो स्वीकार किया है कि वह ये बाते बाजार के लोगों के चर्चा के आधार पर कह रहा है।

इन बातों को आधार बनाकर आधुनिक काल के कुछ इतिहासकारों का भी मानना है कि 1611 ई0 में विवाह के पश्चात् नूरजहाँ ने धीरे–धीरे राजनीति में अपना प्रभाव बढ़ाना शुरू कर दिया। इस काल में उसके पिता एत्मादुद्दौला की शक्ति बढ़ती चली गई ओर उसे प्रधानमंत्री बना दिया गया। उसकी माता अस्मत बेगम जिसने गुलाब से इत्र बनाने की खोज की थी, शाही हरम की प्रमुख मेंट्रन बना दी गई। नूरजहाँ के भाई आसफ खाँ को प्रधान बना दिया गया। 1617 ई0 में आसफ खाँ की पुत्री अर्जुमन्द बानों की शादी गद्दी के हकदार राजकुमार खुर्रम के साथ कर दी गई। ये सभी "नूरजहाँ गुट" के रूप में संगठित होकर मुगल दरबार में सक्रिय हो गए और लगभग एक दषक तक इनका प्रभाव दरबारी राजनीति में बना रहा। इस अवधि मे नूरजहाँ के समर्थक सामंतों को बड़े पद एवं जागीरें प्राप्त हुई, जबकि उसके विरोधियों को नियमित पदोन्नति और जागीरें प्राप्त करने में भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।

यह भी कहा जाता है कि नूरजहाँ द्वारा खुर्रम को समर्थन इसलिए दिया गया था कि वह जहाँगोर के पश्चात् खुर्रम को उत्तराधिकारी के रूप में देखना चाहती थी तथा उसके माध्यम से जहाँगीर के बाद भी अपनी राजनीतिक भूमिका को कायम रखना चाहती थी, परंतु जब खुर्रम को शाहजहाँ को उपाधि मिली और उसका प्रभाव बढ़ गया, तो नूरजहाँ को यह विष्वास हो गया कि महत्वाकांक्षी होने कारण खुर्रम उसके प्रभुत्व में रहना पसंद नहीं करेगा, अतः उसने खुर्रम को समर्थन देना बंद कर दिया और जहाँगीर के एक अन्य पुत्र शहरयार को समर्थन देना आरंभ किया। उसने अपनी बेटी लाडली बेगम का विवाह भी शहरयार के साथ कर दिया और उसे उत्तराधिकारी बनाने के लिए षड़यंत्र करने लगी। इन षड़यंत्रों के कारण ही शाहजादा खुर्रम का विद्रोह सामने आया। शाहजादा खुर्रम ने कंधार पर ईरानी आक्रमण के विरोध का सामना करने तथा राजमहल से दूर रखने के नूरजहाँ के षडयंत्र को समझकर कंधार जाने से इन्कार कर दिया गया 1621–22 में विद्रोह

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 7, July 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कर दिया। इस विद्रोह के कारण कंधार की ठीक ढ़ंग से रक्षा न हो सकी और कंधार पर ईरानियों का अधिकार हो गया।

दिनों दिन राजनीति में नूरजहाँ के बढ़ते प्रभाव ने अमीर उमराओं के बढ़ते असंतोष को तेज कर दिया अतः इतिहासकार का यह भी मानना है कि इसी कारण 1624 ई0 में महावत खाँ का विद्रोह भी सामने आया। आषीर्वादी लाल श्रीवास्तव और बेनी प्रसाद जैसे इतिहाकार इस बात को मानते है कि महावत खाँ राज्यभवत था, परंतु उन सरदारों में से था जो शासन में नूरजहाँ के बढ़ते हुए हस्तक्षेप को पसंद नहीं करते थे। शाहजहाँ के विद्रोह को दबाने का भी प्रमुख श्रेय महावत खाँ को ही था। इससे महावत खाँ के सम्मान और शक्ति में वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त वह शाहजादा परवेज के साथ रहकर कार्य कर रहा था। इस कारण वह परवेज के बहुत निकट हो गया। नूरजहाँ को यह पसंद नहीं था। वह जानती थी कि महावत खाँ राज्य भक्त था, परन्तु वह उसकी सत्ता को पसंद नहीं करता। वह यह भी नहीं चाहती थी कि महावत खाँ जैसा योग्य सरदार परवेज का सहायक बन आए। ऐसी स्थिति में परवेज उसके दामाद शहरयार का मुख्य प्रतिद्वन्दी बन सकता था। डॉ0 एल0 श्रीवास्तव के अनुसार "नूरजहाँ ने महावत खाँ की शक्ति को तोड़ने का निश्चय किया"। जबकि डॉ0 आर0 पी0 त्रिपाठी के अनुसार "महावत खाँ का मुख्य शत्रु नूरजहाँ का भाई आसफ खाँ था जो अपने दामाद (षाहजहाँ) के पक्ष को दृढ़ करने के लिए महावत खाँ का विनाष चाता था। न्रजहाँ अपने भाई की कुटनीति को न समझ सकी और इस कार्य में वह आसफ खाँ की सहायक बन गई"। जैसा भी हो परन्तु इन इतिहासकारों का मामला है कि महावत खाँ की शक्ति को तोड़ने का प्रयत्न शाही दरबार द्वारा किया गया जिसमें नूरजहाँ की सक्रिय भूमिका थी। यह भी सत्य ह कि जब अपमानित होने के कारण कहावत खाँ ने विद्रोह कर दिया और जहाँगीर को झेलम के तट पर बन्दी बना लिया तो नूरजहाँ की सक्रियता और कुटनीति के द्वारा ही विद्रोह को दबाया जा सका।

दूसरी ओर हमें यह भी विचार मिलता है कि नूरजहाँ द्वारा मुगल राजनीति में हस्तक्षेप करने और राज्य को क्षति पहुँचाने के आरोप निराधार है। नुरूल हसन ने "नूरजहाँ गुट" की कल्पना का खंडन करते हुए यह स्पष्ट किया है कि ऐतिहासिक तथ्यों से इसकी पुष्टी नहीं होती। डॉ0 आर0 पी0 त्रिपाठी में भी नूरजहाँ पर लगाए गए आरोपों को अस्वीकार करते हुए स्पष्ट किया है कि जहाँगीर और शाहजहाँ के बीच जो मतभेद थे उसके लिए नूरजहाँ को उत्तरदायी ठहराने का प्रयास जानबूझ कर किया गया है ताकि जहाँगीर और शाहजहाँ दोनों को दोषमुक्त सिद्ध किया जा सके। यदि हम राजनीति में नूरजहाँ के प्रभाव को स्वीकार करते हुए भी ऐतिहासिक तथ्यों को सूक्ष्म परीक्षण करते है तो हम नूरजहाँ की सकारात्मक भूमिका ही नजर आती है और इसके परिणाम भी साम्राज्य के हित में ही नजर आते है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 7, July 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सर्वप्रथम नूरजहाँ पर पारिवारिक दल बनाने का आरोप लगाया जाता है परंतु हम देखते है कि चाहे तुर्क सुल्तान हो या मुगल शासक उनकी सरकार में परिवार के व्यक्तियों को ही सबसे बड़े मनसब, जागीर या पद दिए जाते थे। न केवल दरबार की राजनीति में उनके परिवार का हस्तक्षेप रहता था, बल्कि पुरे देष या साम्राज्य को ही शासक वर्ग अपनी व्यक्तिगत संपत्ति मानता था। जबकि जहाँ तक नूरजहाँ का सवाल ह, उसने जहाँगीर कालीन प्रषासन को चलाने में एत्मादुद्दौला, आसफ खाँ और शाहजहाँ की सहायता अवष्य लेने का प्रयास किया परंतु वह उनकी नेता नहीं थी। ऐसा प्रतीत होता है कि नूरजहाँ का जहाँगीर पर जो प्रभाव था, वह व्यक्तिगत था वह सम्राट से बहुत प्यार करती थी और उसके प्रति वफादार थी।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि शादी को बाद से ही अपने आकर्षण और प्यार के कारण वह जहाँगीर की प्रिय थी तथा शाही हरम में भी उसका प्रभाव बढ गया था, यह भी सत्य है कि 1622 ई0 से जहाँगीर की मृत्यु 1627 ई0 तक राजा के साथ मिलकर सभी शक्तियों का प्रयोग कर रही थी। इसका प्रमुख कारण यह था कि 1621 ई0 तथा उसके पश्चात् घटनाएँ काफी तेजी से घटी। फरवरी 1621 ई0 में शाहजहाँ द्वारा खसुरू की हत्या कर दी गई। इसी बीच अस्मत बेगम की मृत्यु हो गई तथा जहाँगीर बीमार पड़ गया। जनवरी 1622 ई0 में एत्मादुदौला की भी मृत्यु हो गई। इन परिस्थितियों में जहाँगीर को प्रषासनिक सलाह के लिए नूरजहाँ की सख्त आवष्यकता थी। खुसरू की हत्या करने वाले राजकुमार शाहजहाँ पर उसे पूर्ण विष्वास नहीं था। एत्तादुदौला की मृत्यु के पश्चात् उसने नूरजहाँ के नाम से सिक्के ढ़ाले जाने का आदेष दिया तथा यह भी आदेष दिया कि बादषाह के आदेष पत्रों पर भी बादषाह के बाद नूरजहाँ के हस्ताक्षर होगे। वह अब जहाँगीर के साथ झरोखा दर्षन भी देने लगी। एक प्रकार से हम कह सकते है कि 1622 ई0 के पश्चात् जहाँगीर असक्त हो गया था और सरकार और प्रषासन के कार्यो के लिए अपनी विष्वसनीय पत्नी नूरजहाँ पर ज्यादा से ज्यादा निर्भर हो गया था। यही कारण है कि 1622 से 1626 के बीच के **फरमान** और **निशान** जो राजस्थान राज्य आभिलेखागार में पाए गए है, पर नूरजहाँ के हस्ताक्षर मिलते है। इस प्रकार नूरजहाँ ने यथा संभव अपने पति को शासन की कार्य को सूचारू रूप से चलाने में मदद पहुँचायी।

पुनः नूरजहाँ पर लगाया गया यह आरोप भी सही नहीं है कि उसकी शत्रुता शाहजहाँ के साथ थी जिसके कारण दरबारी षड़यंत्र हुए और शाहजहाँ का विद्रोह सामने आया। वास्तव में शाहजहाँ ने भी उसी मुगल परंपरा को अपनाया जिसके अन्तर्गत राजसत्ता के लिए पिता और भाईयों के बीच संघर्ष होते आये थे। बल्कि वास्तविकता तो यह है कि नूरजहाँ के कहने पर ही जहाँगीर ने खर्रम को माफ भी कर दिया था।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 7, July 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इतना ही नहीं महावत खान के विद्रोह को दबाने में नूरजहाँ की भूमिका महत्वपूर्ण थी। उसने न केवल स्वंय सेना का संचालन किया बल्कि कूटनीति द्वारा महावत खान के सैनिकों को अपने पक्ष में मिलाकर मुगल साम्राज्य को एक बड़े संकट से बचाया। फिर हम यह भी देखते है कि 1627 ई0 में जहाँगीर की मृत्यु के पश्चात् उसके सक्रिय राजनीति से भी सन्यास ले लिय। यदि उसमें तनिक भी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा होती तो वह जहाँगीर की मृत्यु के पश्चात् शाहजहाँ के काल में अपने गहरे राजनीतिक अनुभवों और अपने विष्वास पात्र उमराओं या शाहजहाँ के विरोधियों का साथ देकर उसके विरूद्ध आसानी से षड़यंत्र कर सकती थी, जबकि उसके द्वारा इस तरह का कोई प्रयास नहीं किया गया। यह प्रमाणित करता है कि राजनीति में उसकी निष्ठा अपने पति जहाँगीर को सहयोग देने और प्रषासन को सुचारू रूप से चलाने म मदद देने तक ही सीमित थी।

इस प्रकार हम कह सकते है कि मुगल इतिहास में नूरजहाँ की राजनीति भूमिका का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। वह एक बहादुर महिला थी तथा राजनीतिक समस्याओं को समझने की उसमें अद्भूत क्षमता थी, उसने न केवल जहाँगीर के सलाहकार के रूप में कार्य किया बल्कि सक्रिय राजनीति में भी भाग लिया। सम्राट जहाँगीर भी उसपर पूरा विष्वास करता था। यही कारण था कि समकालीन राजनीति और प्रषासन पर उसका महत्वपूर्ण प्रभाव रहा।

संदर्भ ग्रंथः–

1. के० एस० लाल, ''द मुगल हरम''
2. डॉ0 बेनी प्रसाद, हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर
3. सतीशचन्दा, पार्टीज एण्ड पॉलिटिक्स एट दी मुगल कोर्ट
4. रेखा मिश्रा, वीमेन इन मुगल इंडिया, मंषीराम मनोहर लाल, 1967
5. जॉन डी० लेट, द अम्पायर ऑफ द ग्रेट मुगल अनुवाद, हॉलैंड एण्ड बनर्जी, बम्बई 1928
6. माधवानन्द एण्ड आर० सी० मजूमदार, ग्रेट वूमेन ऑफ इंडिया, अल्मोड़ा 1935
7. मजूमदार, राय चौधरी एण्ड दत्त, एन एडवांसड हिस्ट्री ऑफ इण्डिया